शशि कुमार सैनी

जल संरक्षण आज की आवश्यकता

आज जल संकट हमारी भूल और लापरवाहियों से ही उपजा है, हम अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में जल का दोहन कर रहे हैं। दैनिक उपयोग में आवश्यकता से अधिक मात्रा में जल का अपव्यय करने की आदत ने जल संकट को बढ़ा दिया है, बढ़ती जनसंख्या के कारण भी जल का उपभोग बढ़ता जा रहा है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई, वनों के लगातार घटने के कारण वर्षा की मात्रा में कमी आ रही है, यह सब अनियन्त्रित मानवीय गतिविधियों के कारण ही हुआ है अतः इसका निराकरण भी मानव ही कर सकता है।

जल प्रकृति की एक अनमोल धरोहर है, बिना जल के जीवन संभव नहीं है क्योंकि स्वच्छ जल एवं सुरक्षित जल अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है। पूरे विश्व में धरती का लगभग तीन चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है। जिसमें 97 प्रतिशत जल महासागरों में खारे पानी के रूप में मौजूद है, जोकि पीने योग्य नहीं है। पीने योग्य मीठे पानी की मात्रा लगभग 3 प्रतिशत है, इसमें भी लगभग 2 प्रतिशत पानी ग्लेशियर एवं बर्फ के रूप में जमा है। इस प्रकार सही मायने में मात्र लगभग 1 प्रतिशत पानी, (भूजल एवं सतही जल) ही मानव के लिए पीने, कृषि एवं अन्य कार्यों हेतु उपलब्ध है। आज समय है कि हम पानी की कीमत को समझें, यदि जल यूं ही व्यर्थ रूप में बहता रहेगा तो आने वाले समय में पानी की कमी एक महासंकट बन जायेगा। अगर हम सम्पूर्ण विश्व की पूरी जनसंख्या के साथ पीने के पानी का अनुपात निकालें तो पता चलता है कि एक गैलन पानी का उपयोग प्रतिदिन एक अरब लोग कर रहे हैं। भूजल वैज्ञानिकों का यह मानना है कि सन् 2025 तक 3 अरब से ज्यादा लोग पानी की कमी से त्रस्त होंगे। यद्यपि लोगों को थोड़ा-थोड़ा पानी का महत्व समझ में आने लगा है, परन्तु अभी तक मनुष्य ने पूरी तरह से पानी को संरक्षित करना नहीं सीखा है। जल का संरक्षण लोगों को आज से ही शुरू करना होगा। क्योंकि यदि पानी ऐसे ही बर्बाद होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब दुनिया के सामने पानी का घोर संकट सिर पर खड़ा होगा। वर्षों पहले पानी को कोई बेचता नहीं था, परन्तु आज कई प्रमुख कंपनियां पानी को बोतलों में बेच रही हैं, चूंकि सभी जगह स्वच्छ पानी उपलब्ध नहीं है, इसलिए पानी को लोग खरीदकर पीते हैं। आज एक लीटर पानी का दाम 20 से 25 रूपये हो चुका है। अगर जल का संरक्षण नहीं किया गया तो वो दिन दूर नहीं, जब लोग 1 लीटर पानी को 100 से 200 सौ रूपये तक खरीदने के लिए विवश हो जायेंगे। आज बहुत सारे लोग पानी से होने वाली बीमारियों से मर रहे हैं। जिनका आंकड़ा 4 मिलियन से ज्यादा है। साफ पानी की कमी के कारण होने वाली बीमारियों में सबसे ज्यादा विकासशील देश ही पीड़ित हैं। पानी से होने वाली बीमारियों के कारण हर 15 सेकंड में एक बच्चा मर जाता है। अब गर्मी के समय में लोगों को एक घड़ा शुद्ध पानी के लिए मीलों भटकना पड़ रहा है जल के टैंकर अथवा ट्रेन से जल प्राप्त करने के लिए लोगों को घटों कतार में खड़ा रहना पड़ता है। रोजमर्रा के कामकाज, नहाने, कपड़े धोने, खाना बनाने, बर्तन साफ करने, उद्योग धंधों को चलाने के लिये जल तो चाहिए ही पर वह लाया कहां से जाये, जबकि वर्तमान में नदियां, तालाब, ट्यूबवेल, हैण्डपम्प सूखते जा रहे हैं। जल की कमी से अनेक कारखाने बंद होने के कगार पर हैं।

आज जल संकट हमारी भूल और

जल लेने हेतु लगी लंबी कतार।

लापरवाहियों से ही उपजा है, हम अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में जल का दोहन कर रहे हैं। दैनिक उपयोग में आवश्यकता से अधिक मात्रा में जल का अपव्यय करने की आदत ने जल संकट को बढ़ा दिया है, बढ़ती जनसंख्या के कारण भी जल का उपभोग बढ़ता जा रहा है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई, वनों के लगातार घटने के कारण वर्षा की मात्रा में कमी आ रही है, यह सब अनियन्त्रित मानवीय गतिविधियों के कारण ही हुआ है अतः इसका निराकरण भी मानव ही कर सकता है।

सच में आपको जानकर हैरानी होगी कि अखबार का एक पेज बनाने में 13 लीटर पानी बर्बाद हो जाता है, तो सोचिए पूरे विश्व में कितना पानी बर्बाद होता होगा। यद्यपि पानी की एक बूंद मात्र देखने में बहुत कम लगती है, परन्तु यदि इसके अपव्यय को न रोका जाये तो बहुत सा पानी व्यर्थ में बर्बाद हो जाता है। आंकड़ों के अनुसार एक टपकते नल से प्रति सैकेन्ड में एक बूंद बह जाने से एक माह में 760 लीटर पानी बह जाता है और सीधे नल से नहाने पर 90 लीटर से ज्यादा पानी खर्च हो जाता है। हाथ धोकर नल को ठीक प्रकार से बंद नहीं करने पर एक मिनट में 30 बूंद तथा वर्षभर में 46 हजार लीटर पानी बेकार में बह जाता है। वर्तमान में जल संरक्षण का अर्थ पानी की बर्बादी को रोकने से है। जल संरक्षण आज की एक अनिवार्य आवश्यकता है। आज यदि हमारे देश में वर्षा के जल का संग्रह एवं संरक्षण किया जाये तो वर्तमान में उभरते जल संकट को दूर किया जा सकता है। हमारे देश की अधिकांश नदियों में पानी की मात्रा बेहद कम हो गयी है। इनमें कावेरी, कृष्णा, माही, पेन्नार, साबरमती, गोदावरी और ताप्ती आदि नदियां प्रमुख हैं। पानी की कमी और जल प्रदूषण का मुख्य कारण हमेशा बढ़ती जनसंख्या और तेजी से बढ़ता औद्योगिकरण और शहरीकरण है। स्वच्छ जल की कमी के कारण निकट भविष्य में लोग अपनी जरूरतों को भी ठीक से पूरा नहीं कर पाएंगे।

आज धरती पर जीवन को बचाये रखने के लिए जल का संरक्षण बहुत जरूरी है। क्योंकि जल के बिना जीवन संभव नहीं है। पूरे ब्रहमाण्ड में पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा ग्रह है जो जीवन चक्र को जारी रखने में ज्यादा मदद करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिर्पोट में पाया गया है कि राजस्थान के स्कूलों में बहुत कम लड़कियां स्कूल जाती हैं क्योंकि अधिकांश लड़कियों को पानी लाने के लिए लम्बी दूरी तय करनी पड़ती है। जो उनके पूरे दिन को खराब कर देती है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के एक सर्वेक्षण में पाया गया है, कि 16,632 किसान 2,370 महिलाऐ आत्महत्या के द्वारा अपना जीवन समाप्त कर चुके हैं। यद्यपि 14.5 प्रतिशत मामले सूखे के कारण घटित हुए हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारत और दूसरे विकासशील देशों में अशिक्षा, आत्महत्या की बढ़ती प्रवृति और सामाजिक मुददों का कारण भी पानी की कमी ही है। आज पानी के बढ़ते संकट के कारण भारत, अफ्रीका, एशिया के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को साफ पानी की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। गौरतलब है कि एक चार-पांच सदस्यों वाला छोटा परिवार औसतन 960 लीटर पानी प्रतिदिन खर्च कर देता है। विश्व में यूनाईटेड स्टेट, अरब, दुबई, कतर, ओमान, सउदी, ऐसे देश हैं जहां पर पानी 60 रूपये में आधा लीटर ही मिल पाता है और साउथ अफ्रीका के कैपटाउन में तो नहाने तक के लिए पानी उपलब्ध नहीं है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि यदि हम जल संरक्षण के प्रति गंभीर नहीं हुए तो तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा और अब यह बात बिल्कुल सही लगने लगी है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के आंकड़ों के अनुसार छः अरब की आबादी वाली इस दुनिया में हर छठा व्यक्ति सुरक्षित पेयजल से वंचित है। पिछली सदी में विश्व की जनसंख्या तीन गुना बढ़ चुकी है और इसी अवधि में पानी की खपत छः गुनी बढ़ चुकी है। संभवतः 2050 तक संसार का हर चौथा व्यक्ति पानी की समस्या से त्रस्त होगा। जल वैज्ञानिकों का मानना है कि आगामी 50 वर्षों के दौरान 60 देशों की 07 अरब आबादी को पर्याप्त जल मुहैया नहीं हो पायेगा और अगले दशकों में पश्चिम एशिया और अफ्रीका के मुल्कों को पानी की गम्भीर समस्या से जूझना पड़ेगा।

वर्तमान में जल संकट की समस्या देश की ही नहीं है वरन् पूरी विश्व-व्यापी समस्या बन गयी है। दुनियाभर के जल वैज्ञानिकों की राय है कि वर्षा जल का संरक्षण करके गिरते भू-जल स्तर को रोका जाना चाहिए, क्योंकि भू-जल पानी का एक

वर्तमान में जल संकट की समस्या देश की ही नहीं है वरन् पूरी विश्व-व्यापी समस्या बन गयी है। दुनियाभर के जल वैज्ञानिकों की राय है कि वर्षा जल का संरक्षण करके गिरते भू-जल स्तर को रोका जाना चाहिए, क्योंकि भू-जल पानी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और पृथ्वी पर होने वाली जलापूर्ति अधिकतर भू-जल पर ही निर्भर करती है। आज पानी का बेदर्दी से दोहन हो रहा है। अनियमित वातावरण से कहीं धरती फट रही है तो कहीं पर अचानक जमीन तप रही है। उत्तर प्रदेश के बुंदेलखण्ड, अवध, बृज का क्षेत्र तथा आगरा की घटनायें इसका प्रबल प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। ये घटनायें संकेत दे चुकी हैं कि भविष्य में जल संकट की स्थिति कितना विकराल रूप धारण कर सकती है। भू-गर्भ वैज्ञानिकों का मानना है कि भू-जल के अंधाधुंध दोहन से जमीन नीचे धंसती जा रही है। जोकि शुभ संकेत नहीं है।

महत्वपूर्ण स्रोत है और पृथ्वी पर होने वाली जलापूर्ति अधिकतर भू-जल पर ही निर्भर करती है। आज पानी का बेदर्दी से दोहन हो रहा है। अनियमित वातावरण से कहीं धरती फट रही है तो कहीं पर अचानक जमीन तप रही है। उत्तर प्रदेश के बुंदेलखण्ड, अवध, बृज का क्षेत्र तथा आगरा की घटनायें इसका प्रबल प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। ये घटनायें संकेत दे चुकी हैं कि भविष्य में जल संकट की स्थिति कितना विकराल रूप धारण कर सकती है। भू-गर्भ वैज्ञानिकों का मानना है कि भू-जल के अंधाधुंध दोहन से जमीन नीचे धंसती जा रही है। जो कि शुभ संकेत नहीं है।

पानी के इस संकट को तभी रोका जा सकता है जब ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के भूजल को नियंत्रित किया जाये। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसाार भू-जल का 80 प्रतिशत से अधिक भाग कृषि क्षेत्र में उपयोग होता है। इसके लिए जरूरी है कि कृषि के साथ-साथ उद्योगों की भी जिम्मेदारी सुनिश्चित होनी चाहिए। भारत के शहरों में औद्योगिकरण बढ़ रहा है जिससे जल एंव वायु दोनों पर ही विपरीत प्रभाव पड़ रहा है जिससे वायु दूषित होने लगी है और जल का स्तर भी नीचे जा रहा है। औद्योगिक इकाईयां इतना पानी एक दिन में खींच लेती हैं, जितना पानी एक गांव पूरे महीने भी नहीं खींच पाता है, वर्षा के जल का समुचित संरक्षण एवं प्रबन्धन आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब पूरा समाज मिलकर तालाबों को पुनर्जीवित करे, खेतों में सिंचाई के लिए पक्की नालियों का निर्माण हो, पी.वी.सी. पाईपों का इस्तेमाल हो, इससे बहाव क्षेत्र में पानी को संचित किया जा सकता है। इसके लिए बांध बनाये जायें, ताकि यह पानी समुद्र में न जा सके। भू-जल संरक्षण के लिए आमजन की जागरूकता के साथ-साथ जन सहभागिता से ही भू-जल संरक्षण के लिए देशव्यापी अभियान जल विज्ञान संस्थानों के माध्यम से सम्पूर्ण देश भर में चलाया जाना जरूरी है। आज समूचे यूरोप के 60 प्रतिशत औद्योगिक एवं शहरी क्षेत्रों को भूजल के गम्भीर संकटों का सामना करना पड़ रहा है। नेपाल, फिजी, फिलिपीन्स, आस्ट्रेलिया आदि देशों में भी जल संकट बढ़ रहा है विश्व में कुल जल उपयोग का 15 प्रतिशत भाग जल उद्देश्यों के लिए उपयोग में लाया जाता है। शहरी आबादी बढ़ने के साथ-साथ कम होते जल संसाधनों ने शहरों में जल संकट को बढ़ा दिया है। एक रिपोर्ट के अनुसार सन् 2050 तक भारत की 50 प्रतिशत आबादी शहरों मे निवास करेगी जिससे पेयजल और घरेलू कार्यों में प्रयोग होने वाले जल में भारी कमी आयेगी। आज भारत में लगभग 9.5 करोड़ शहरी क्षेत्र के लोगों के पास पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है। आज जल संरक्षण के लिए हर स्तर पर सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। जल की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए हम सभी को जन जागरण अभियान चलाकर जल संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे। बच्चों, महिलाओं, पुरूषों को जल संरक्षण के महत्व से परिचित कराना होगा और घरों की छतों पर वर्षा के पानी का भण्डारण करके इसे काम में लेना होगा। विद्यालय की पाठ्य पुस्तकों में जल संरक्षण को एक विषय के रूप में बच्चों को बढ़ाया जाये। ताकि बचपन से ही बच्चों में पानी के बचाव के संस्कार विकसित हो सकें। लोगों को अपने बागों में तभी पानी देना चाहिए जब इसकी जरूरत हो, पाईप से पानी देने के बजाय फुहारे से पानी देना बेहतर होगा। इससे कई गैलन पानी की बचत होगी। कार को धोने के लिए पाईप की जगह मग का इस्तमाल करें इससे 150 गैलन पानी की बचत होगी। घरों में कपड़े धोने की मशीन का प्रयोग करने से प्रतिमाह 300 से 800 गैलन पानी बचाया जा सकता है। आज कई क्षेत्रों में बिना रोकथाम के पानी निकालने से भूजल के स्तर में भारी गिरावट आ रही है इसके लिए भूजल के वितरण प्रबन्धन नियमों का सख्ती से पालन कराया जाना जरूरी है। साथ ही इसके लिए नये कानून बनाये जाने की भी आवश्यकता है जिसमें किसी भी प्रकार के वाटर वेस्टेज को गैर कानूनी मानते हुए सख्ती से जुर्माना वसूले जाने का प्राविधान निहित हो। दूसरी तरफ वर्षा के जल संचयन की आदत जल संरक्षण हेतु मील का पत्थर साबित हो सकती है, एक वर्षा के बाद, अगली बारिश से छतों मे वर्षा जल का संचय किया जाये। भविष्य मे जल संकट का सामना आने वाली युवा पीढ़ी को करना है, क्योंकि वे ही कल के उपभोक्ता होंगे। आज का युवक कल का वैज्ञानिक, समाजसेवी, कृषक, उद्योगपति, शासक, राजनेता, चिकित्सक एवं अभियन्ता आदि होगें। यदि युवाओं में जल के संरक्षण और इसके महत्व के प्रति जागरूकता होगी तो वह कल किसी भी पद पर जाकर इसका सदुपयोग करेगे। इसमें युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है तभी हम सभी जल की इस गम्भीर समस्या का समाधान निकाल सकते है। अन्त में मैं पानी के बचाव हेतु यही कहना चाहूंगा कि ....

पानी जीवन के लिए, उत्तम साधन एक।
इसकी जो रक्षा करे, काम करे वह नेक।।

आज पानी का बेदर्दी से दोहन हो रहा है।

संपर्क करें:
शशि कुमार सैनी
म.नं. 682/119 शिव चौक, रामनगर
पक्की वाली गली, रूड़की-247 667
जिला-हरिद्वार (उत्तराखंड)
मो. 9411100320